धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

नवम्बर- 2011

* जीवन प्रसंग
* 1925 के महायज्ञ के आरम्भिक दिन में भगवान देवात्मा के एक उपदेश का सारांश
* गुस्से की कीलों के गहरे निशान
* मनुष्य होकर पशु रहना
* एक महान लेखक के विचार
* परिवार में बजुरगों की भूमिका
* शुभ संग्राम
* महोत्सव का प्रोग्राम

जीवन प्रसंग

रावण के पास निजबल, जनबल व बाहुबल था, आत्मबल नहीं

बहुत से लोग अपनी योग्यता, परिश्रम, निष्ठा से शिखर पर पहुंचते हैं। शीर्ष पर पहुंचना फिर भी संभव होता है, लेकिन वहां बने रहने में बड़ी ताकत लगती है और जो उसमें चूक गया, उसे नीचे आने में देर भी नहीं लगती। रावण के साथ यही हुआ था। योग्यता जब भ्रमित हो जाए, जानबूझकर अपना दुरूपयोग करने लगे तो रावण जैसे पात्र सामने आते हैं। रावण इतना विद्वान था कि यदि उसने शक्ति का दुरूपयोग न किया होता तो वह किसी महाकाव्य का नायक होता। लेकिन अपनी योग्यताओं के दुरूपयोग से वह दुनिया का बड़ा खलनायक बन गया। उसने जो युद्ध लड़े थे, वे दुर्लभ थे। ऐसे में उस सर्वसंपन्न के सामने अपने ही राज्य से निष्कासित, अकेले, संघर्षरत श्री राम थे। फिर भी वे रावण को क्यों पराजित कर गए, इससे हम अपने जीवन की धारा बदल सकते हैं। रावण के पास सब था, निजबल, जनबल व बाहुबल, बस एक चीज की कमी थी और वह था आत्मबल। राम के पास यह सारे बल नहीं थे, पर आत्मबल गजब का था। रावण अपने वर्तमान पर इतना टिक गया कि भूल ही गया कि भविष्य भी कुछ होता है। जो लोग वर्तमान पर अधिक टिकते हैं, उनके जीवन में विलास आने में देर नहीं लगती। राम के पास दूरदृष्टि थी और उनका उद्देश्य रावण को मारना ही नहीं था। वे लोक शिक्षा, जनसामान्य के आत्मविश्वास को लौटाने के लिए आए थे। इसलिए रावण आज भी मारा जा रहा है और राम आज भी पूजे जा रहे हैं।

गुरू गोबिंद सिंह ने असहाय शत्रु की सहायता का संदेश दिया

औरंगजेब के मन में साम्राज्य विस्तार की बहुत लिप्सा थी। इसी के चलते वह अनेक राज्यों पर अपनी विशाल सेना व मजबूत साधनों के बल पर कब्जा जमा लेता था। उसकी सेना में लगभग पांच लाख सैनिक थे, जो विभिन्न प्रकार के शस्त्रास्त्रों से लैस थे। इस बार औरंगजेब ने आंनदपुर पर चढ़ाई कर दी। गुरू गोबिंदसिंह के पास मात्र 10 हजार खालसा वीर थे। फिर भी उन्होंने शाही सेना का डटकर मुकाबला किया। सत्य और न्याय की शक्ति उनके साथ थी और गुरू गोबिंद सिंह जैसा ओजस्वी, धर्म परायण और साहसी व्यक्ति उनका नेता था। इन्हीं खालसा वीरों में एक भाई कन्हैया था। उसका काम घायल सैनिकों को पानी पिलाने का था। एक दिन सिख सैनिकों ने देखा कि वह दुश्मन के घायल सैनिकों को भी पानी पिला रहा है। लड़ाई रुकने पर उन्होंने इसकी शिकायत गुरूजी से की। गुरूजी ने कन्हैया से पूछा तो वह बोला-मैं कुछ नहीं जानता, गुरूजी। मुझे तो पानी पिलाने का काम दिया गया है, सो मैं हर आहत को पानी पिला रहा था। यह सुनकर गुरू गोबिंदसिंह स्नेह से बोले-असहाय मात्र असहाय होता है, चाहे वह अपना हो या पराया। उसकी सेवा करना इंसान का कर्तव्य है। भाई, तुमने अपने कर्तव्य का पालन किया है। भविष्य में तुम अपने साथ मरहम भी रखो और जो घायल हों, उनके जख्मों पर मरहम भी लगाया करो।। सार यह है कि लाचारों की सेवा व सहायता में मित्र और शत्रु का भेद नहीं करना चाहिए। यही सच्चा मानव धर्म है।

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 11

नवम्बर - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

1925 के महायज्ञ के आरम्भिक दिन में भगवान देवात्मा के एक उपदेश का सारांश

भगवान देवात्मा ने फरमाया कि देवात्मा ने मनुष्यात्माओं के कल्याण के लिए जो सोलह यज्ञ स्थापन किए है उनमें से आज जिस यज्ञ का आरम्भ होता है उसे देवगुरू या व महायज्ञ कहते हैं। यही यज्ञ मूल यज्ञ है।

प्रत्येक मनुष्य को नेचर के विषय में अपनी प्रकृत आत्मिक अवस्था देखने के लिए और उसके आत्मा में जिस जिस प्रकार के नीच अनुराग और जिस जिस प्रकार की नीच घृणाएं वर्तमान हैं और उनसे जिस जिस प्रकार की मिथ्या और अहित की उत्पति होती है उनके हानिकारक व विनाशकारी रूप को उपलब्ध करने के लिए जिस अद्वितीय देव ज्योति की प्राप्ति की जरूरत है वह एकमात्र देवात्मा से ही प्राप्त हो सकती है। इस तरह उनसे सच्ची मोक्ष और किसी एक व कई सात्विक भावों को विकसित करने के लिए भगवान देवात्मा के जिस अद्वितीय देव तेज की प्राप्ति की जरूरत है उसकी प्राप्ति भी एक मात्र देवात्मा से ही हो सकती है इसलिए इन दोनों की ही प्राप्ति के लिए देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध के स्थापन करने की मूल और लाज़मी आवश्यकता है।

देवात्मा में इस देव ज्योति और इस देव तेज का विकास उनकी जिन हित और सत्य विषयक सर्वांग और अहित और मिथ्या विषयक सर्वांग और अद्वितीय देव घृणा शक्तियों से हुआ है। उन देव शक्तियों से दुनियां के सब कहलाने वाले उपास्य देवते व माबूद खाली थे। इसलिए देवात्मा ने अपनी इन देव शक्तियों से विकसित देव ज्योति और देव तेज के द्वारा नेचर के अटल नियमों के अनुसार मनुष्यात्माओं में जिस जिस प्रकार के आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन उत्पन्न किए हैं, वह कोई और माबूद पैदा नहीं कर सका और न अब कर सकता है।

मेरी शिक्षा यह है कि प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने दिल के विविध भाव ही चलाते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपनी एक व दूसरी अनुराग व घृणा शक्ति के द्वारा एक व दूसरे प्रकार की हरकत व गति करता है। और क्या अपनी जात और क्या नेचर के अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में जिस जिस प्रकार की बुराईयों व हानियें का मूजब बनता है,

उससे सिवाए देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति और अद्वितीय देव तेज के किसी मज़हब व गवर्नमैण्ट का कोई हुकम मोक्ष नहीं दे सकता।

अब प्रश्न यह है कि देवात्मा की यह देवज्योति और उनका यह देव तेज किसी जन को कैसे प्राप्त हो सकता है। इस का उत्तर यह है कि देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने से, देवात्मा के देव रूप के प्रति किसी जन को कुछ आकर्षण महसूस हो। परन्तु जो जन नीच सुखों का अनुरागी है उसके भीतर से पहले तो देवात्मा के प्रति कोई आकर्षण पैदा नहीं हो सकता। और यदि उसे इस प्रकार के आकर्षण का कोई भाव बीज रूप में अपने जन्म काल से मिला हो तो वह विरोधी सामानों में मर जाता है।

मेरी यह बहुत पुरानी शिकायत है कि देव समाज के लोग सिवाए किसी किसी जन के क्या अपने आत्मा और क्या अपने शरीर और क्या अपने पारिवारिक जनों के आत्मिक जीवन और किसी भी भले काम के सम्बन्ध में मेरे पास आकर कोई बातचीत नही करते। वह ऐसों के साथ खूब मिलते जुलते और बातचीत करते हैं कि जिनके साथ उनकी प्रकृति का मेल होता है। इसीलिए लोग अपने बीवी बच्चों और अपनी जैसी प्रकृति वाले दोस्तों के साथ रहने में खुश रहते हैं। देवात्मा उनकी पत्नि नहीं कि वह उसकी तरफ आकृष्ट हों। देवात्मा उनका बेटा नहीं कि वह उसके लिए कोई कशिश महसूस कर सके। देवात्मा रुपया नहीं, जायदाद नहीं कि वह उसकी तरफ मायल हो (झुकाव रखें)

भगवान देवात्मा ने श्रीमान देवत्व सिंह जी की जिन्दगी की कुछ घटनाएं सुनाई। शुरू शुरू में उनमें देवात्मा के लिए आकर्षण पैदा हुआ परन्तु अंह अनुराग के बढ़ने से वह रूहानी मौत का शिकार होनेवाले थे मगर बहुत खैर हुई कि एक दिन देवात्मा के उपदेश से उन्हें घमण्ड रूपी महा विनाशकारी राक्षस का असल रूप दिखाई दे गया। तब से उनकी जिन्दगी का रास्ता बिल्कुल बदल गया। शोक कि अब उन्हें श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसे सुयोग्य प्रचारक प्राप्त नहीं हैं। बेशक देव समाज में कुछ आदमी ऐसे हैं जो परिश्रमी हैं। काम चोर नहीं हैं। पूरे दयानतदार हैं। मगर वह देवसमाज के किसी विभाग का चार्ज लेने के योग्य नहीं है।

मुझे सबसे बढ़कर फिकर प्रचार विभाग के सम्बन्ध में रहता है। कितने ही काम तो रुपये के द्वारा हो सकते हैं, मगर आत्मिक परिवर्तन का काम रूपये से नहीं हो सकता।

मैं यह जानता हूँ और साफ़ तौर से देखता हूँ कि नेचर का विकासकारी नियम और काम अटल है। मेरी जो शुभ इच्छा आज पूरी नहीं हो सकती वह कल पूरी होगी। मगर ठीक समय के आने पर जरूर पूरी होकर रहेगी।

याद रखो! मैं सब प्रकार की पुरोहताई को नष्ट करने के लिए प्रगट हुआ हूँ। मैं स्वाद अनुराग, काम अनुराग को मिटाने के लिए ज़ाहिर हुआ हूँ। मैं स्वार्थपरता और स्वेच्छा चारिता को गारत करने के लिए आया हूँ। मैं घमण्ड से अधिकारी जनों का उद्धार करने के लिए पैदा हुआ हूँ। मुझे ऐसे जन अवश्य मिलेंगे जो आत्मा देवात्मा को पहचानेंगे

और अपने और औरों के आत्मिक हित के लिए सब कुछ अर्पण कर सकेंगे।

भगवान ने भरे दिल से जोरदार अपील करते हुए फ़रमाया, तुम काहे को उन वस्तुओं को चाहते हो, जो तुम्हारी नहीं। क्यों न देव ज्योति से तुम्हारी आँखे खुलें। और तुम्हारा अन्धकार दूर हो। और तुम देख सको कि जिन को तुम अपनी पत्नी और सन्तान आदि कहते हो और जिनकी गुलामी में फंसे हुए हो वह तुम्हारे नहीं हैं। एक दिन तुम उस से जुदा हो जाओगे और जिसे तुम अपनी जायदाद और अपना रूपया कहते हो, एक दिन वह तुम्हारा न रहेगा। तब तुम उनके पीछे क्यों मरे जाते हो? ऐ समाज के लोगो, सच्चाई और भलाई के राज्य को लाने के लिए कुछ त्याग और अर्पण करना सीखो। अपनी जायदाद अपना समय और अपना शरीर अपना दिमाग अर्पण करो यदि नहीं करोगे तो यह सब कुछ तो तुम्हारे हाथ से एक दिन चला जाएगा लेकिन साथ ही उससे तुम्हारी आत्मा भी दिनों दिन पतित होती जाएगी और तुम हर तरह से घाटे में रहोगे।

जीवन प्रसंग

गुस्से की कीलों के गहरे निशान

(1)

देश के पूर्वोत्तर में मानो नाम का एक गांव था। गांव में मनु नामक एक व्यक्ति रहता था। उसके परिवार में पति पत्नी और उनका गुस्सैल बेटा था। मनु के बेटे को बहुत गुस्सा आता था। उसकी इस प्रकृति को देखकर उसके पिता ने एक दिन उसे कीलों से भरा थैला दे दिया और कहा कि अब जब भी गुस्सा आए, तो वह बाहर की दिवार पर एक कील गाड़ दे। पहले दिन बच्चे ने दिवार पर 57 कीलें गाड़ दी। अगले कुछ सप्ताहों में धीरे- धीरे दिवार पर कीलों की संख्या में वृद्धि हो गई। फिर पिता ने कहा कि अब एक एक करके कीलें उखाड़ो। जहां से कीलें उखाड़ी जाती वहां निशान बनते गए, तो पिता ने समझाया कि जिस पर गुस्सा करते हो, उसके दिल पर भी निशान पड़ते जाते हैं।

इसका अर्थ है कि हमें अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए। क्योंकि एक बार गुस्सा करने से चाहे हम लाख मुआफी मांगे, दूसरों के दिलों पर पड़े घाव हम मिटा नहीं सकते। इसलिए गुस्से को काबू में रखना चाहिए।

(2)

पीड़ादायक स्मृतियों को भुला देना बुद्धिमानी है और अच्छी बातों को याद रखना समझदारी। कुछ घटनाएं जीवन में ऐसी होती रहती हैं, यदि उनको न भुलाया जाए तो मान्सिक उधेड़ बुन में डाल देती हैं और फिर एक घटना कई विपरीत घटनाओं को जन्म देने वाली बन जाती है। इसलिए अप्रिय प्रसंगों को तत्काल विस्मृत करें। उनको अपने साथ चपेट कर रखने का नाम है चिन्ता। चिन्ता करने वाला आदमी कुछ समय बाद अवसाद में ज़रूर डूबेगा। प्रिय वा अच्छी स्थितियां सदुपयोग के लिए होती हैं। इसका सीधा असर आपके स्वास्थ पर पड़ता है।

मनुष्य होकर पशु रहना

एक बार मैं एक स्थान पर लैक्चर दे रहा था। अपने इस भाषण में एक प्रसंग में मैंने यह कह दिया कि मनुष्य साधारणत: पशु ही है और कई बार वह पशु से भी अधिक नीच बन जाता है।

उपस्थित जनों में बैठे एक हाई स्कूल के हैडमास्टर साहिब यह सुनकर चौंक पड़े, उठे और कुछ क्रोधित होकर कहने लगे कि "मनुष्य की तुलना पशु के साथ किसी प्रकार भी उचित नहीं और मनुष्य कभी भी पशु से नीच नहीं होता। " एक पढ़े लिखे सज्जन के विचार जानकर मैं सोच में पड़ गया और मेरे सामने यह हक़ीकत खुल गई कि बहुत गिनती में मनुष्यों का यही विश्वास है जो बहुत बड़ी ज़्यादती है।

किसी किसी विशेष मनुष्य को छोड़कर, आम मनुष्य पशु स्तर पर ही जीता है। जैसे पशु के कुछ धुरे होते हैं, जिन पर पशु घूमता है, लगभग वही धुरे आम मनुष्य के होते हैं। जो एक एक स्तर पर पशु जीवन प्रगट करता है, यदि वही मूल्य रखकर मनुष्य भी जीता है, तो वह पशु स्तर पर ही खड़ा है।

(1) प्रत्येक पशु का धुरा खुराक है, वह खुराक खाने के लिए जीता है। उसकी प्राप्ति के लिए वह हरकत में आता है। वह सदा खुराक के लिए संग्रामशील रहता है।

(2) पशु जीवन में सुख से पड़े रहना हावी है। वह खा पीकर आराम से लेटना चाहता है। यदि कोई ज़बरदस्ती उससे काम ले ले, तो अलग बात है, परन्तु स्वयं उसकी रुचि आराम तलबी की ही है।

(3) पशु एक सीमा तक अपनी सन्तान के लिए जीता है, वह उनकी परवरिश के लिए प्रयत्न करता है।

(4) पशु के भीतर लिंग वासना है, वह अपनी वासना की समय समय पर तृप्ति चाहता है।

उपरोक्त चारों बातें पशु जीवन के धुरे हैं। प्रत्येक जीव, जन्तु और पशु इन चारों की तृप्ति के लिए जीता है, यदि उससे कोई पकड़ कर काम ले ले, तो ठीक, स्वंय वह काम नहीं चाहता।

पशु का कोई मनोरथ नहीं, यदि हम गहराई से सोच विचार करें तो हम समझ सकते हैं कि मनुष्य के जीवन के भी यही मूल्य हैं। मनुष्य के भी यही धुरे और आर्कषण हैं। मनुष्य साधारणत: खाने पीने के लिए जीता है, अपने बाल बच्चों के लिए जीता है, सुख आराम की तृप्ति के लिए जीता है। उसका कुल संग्राम, उसकी भाग दौड़ सब इन्हीं सुखों की तृप्ति के लिए होती है, इसलिए उसके जीवन का स्तर पशु के जीवन के स्तर तक ही सीमित है। अन्तर उसके खाद्य पदार्थ की विभिन्न किस्मों का है, उनकी उत्तमता का है, लिंग साधनों की बहुतायत, आराम के साधनों की उत्तमता और बहुतायत का है, उनकी सन्तान की अधिक गुलामी और उसके प्रति समर्पण का है। मुख्य रूप से मनुष्य का जीवन इन चारों बातों के लिए संग्रामशील रहता है। इनकी पूर्ति और तृप्ति ही मनुष्य का मुख्य मनोरथ होता है। और कोई ऊंचा ध्येय जैसे पशुओं में देखने को नहीं मिलता, उसी प्रकार मनुष्य जीवन में उच्च मूल्य वा उच्च ध्येय का अकाल पड़ा हुआ है।

पशु का अस्तित्व एक शरीर को लेकर ही मुख्य तौर पर होता है। उसमें मान्सिक शक्ति बेशक होती है, परन्तु बहुत सीमित। उसमें रुचियां होती हैं, परन्तु कोई उच्च भाव नहीं होते। इसीलिए पशु केवल शरीर के लिए जीता है। उसकी कोई मान्सिक वा

भावात्मक आवश्यकता नहीं होती। वह केवल पेट पालने के लिए जीता है।

इसी प्रकार जो मनुष्य केवल शरीर की आवश्यकताओं वा सुखों का तो अनुभव रखता है और उनके लिए भाग दौड़ करता रहता है, परन्तु मान्सिक और भावात्मक आवश्यकता को अुनभव नहीं करता, तो वह पशु स्तर पर ही जीता है। थोड़े ऐसे जन हैं जो मान्सिक खुराक और रूहानी खुराक की आवश्यकता को अनुभव करते हैं। यदि कोई मनुष्य मान्सिक ज्ञान वा हुनर की आवश्यकता को अनुभव करता है, तो वह भी अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की उत्तम ढंग से तृप्ति करने के लिए। कुछ विचारशीलों की तो यह राय है कि बहुत सारे पुरुष और औरतें सब ही कोई आत्मा वा रूह नहीं रखते।

जो मनुष्य उच्च ज्ञान की कोई लालसा नहीं रखता, जो मनुष्य किसी स्कूल, कालिज, यूनिवर्सिटी आदि में जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता किसी नैतिक नियम की परवाह नहीं करता, वह केवल पशु ही रह जाता है, वह पशु के स्तर पर ही होता है।

पशुओं का जीवन रुचियों के दासत्व का जीवन और नीच वासनाओं का जीवन है। उसी प्रकार जो मनुष्य केवल अपनी रुचियों वा वासनाओं के लिए ही जीता है, जैसा कि आम मनुष्य जी रहा है, वह पशु स्तर पर ही जी रहा है।

मनुष्य ने अपनी सदा बढ़ती हुई अकल से अपनी रुचियों की तृप्ति के साधनों को बहुत विस्तृत कर लिया है और कर रहा है।

पशु जीवन से बढ़कर मनुष्य जीवन का एक और धुरा है, वह है मान सम्मान का, पद प्रभुत्व का, निज प्रशंसा का। किसी भी पशु के भीतर उपरोक्त कोई लालसा नहीं होती, केवल मनुष्य ही अंह सम्बन्धी मान प्रशंसा आदि का लालसी है। इस लालसा के लिए वह धन जोड़ता है, बहुत अधिक सामान और सम्बन्धी बनाता है। यह लालसा भी जीवन मूल्यों को ऊंचा नही उठाता है, उल्टा कई पहलुओं में पशुओं से भी नीच बन जाता है।

पशु बहुत से हितकर होते हैं (हिसक पशुओं को छोड़कर) वह मनुष्य के लिए सेवाकारी होते हैं। वह बेशक शारीरिक स्तर पर ही जीते हैं। परन्तु उनको पकड़ कर मनुष्य अपने लिए उन्हें लाभदायक बना लेता है। जिस प्रकार गाए, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, बैल, घोड़ा, गधा, हाथी, कुत्ता आदि हितकर और सेवाकारी बन सकते हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए नीच तो बन जाता है, परन्तु उसके लिए सेवा का स्त्रोत बनना अति कठिन है।

निज सुख और स्वार्थ पूर्ति और अंह शक्तियों की फसल के जो अंकुर मनुष्य के हृदय में फूटते हैं, उससे पशु हृदय पवित्र और निर्मल होता है और मनुष्य जिस दर्जे अपने सुख की सिद्धि के लिए घातक बन जाता है, उस दर्जे पशु नहीं बन सकता।

जिस मनुष्य की कोई मान्सिक आवश्यकता नहीं, वह दो टांगों वाला पशु ही है। जो कोई मनुष्य कोई पुस्तक नहीं पढ़ता, कोई लाईब्रेरी नहीं रखता, हितकर ज्ञान की प्राप्ति की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं करता, उसके लिए किसी हरकत में नहीं आता, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

जो कोई मनुष्य भावात्मक आवश्यकताएं नहीं रखता, किसी सात्विक भावना के लिए आर्कषण नहीं रखता, कोई आत्मा वा रूह के अस्तित्व का एहसास

नहीं रखता, कोई रूह सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं। वह एक विद्वान वा अमीर हो सकता है, दो टांगों वाला पशु तो हो सकता है परन्तु उसका जीवन स्तर पशु स्तर का होने के कारण वह मनुष्य नहीं कहला सकता।

इस विषय में गुरू महाराज एक स्थान पर फरमाते हैं :-

"नेचर के विकास में मनुष्य का प्रकाश पशु जगत से हुआ है। पशु जगत के सब जीव एक या दूसरी शक्ति के कार्य को तो देखते हैं। उस कारज को किसी सीमा तक अनुभव भी करते हैं, परन्तु वह किसी शक्ति के रूप को उपलब्ध नहीं करते और न ही कर सकते है। उनमें ऐसी मान्सिक शक्तियां नहीं जिनके द्वारा उन पर शक्ति तत्व प्रगट हो, और वह उसके विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकें। मनुष्य जगत के विकास में अवश्य ऐसी योग्यता रखने वाले कुछ कुछ जन प्रगट हुए हैं जो अपनी मान्सिक शक्तियों के उन्नत होने से उनके द्वारा शक्ति के रूप को उपलब्ध कर सकते हैं, और उसके विषय में सत्य वा तत्व को समझ भी सकते हैं, परन्तु ऐसे मनुष्य भी बहुत हैं, जिनमें यह योग्यता नहीं और वह शक्ति के रूप और उसके विषय में किसी तत्व को समझ नहीं सकते, यहां तक कि उसके सम्बन्ध में कोई उपदेश सुनकर या कोई लेख लिखकर, उसको पढ़कर भी उसको अनुभव या उसके सम्बन्ध में एक या दूसरी बात याद करके और उसको तोते की तरह सुनाकर या बताकर भी, उसके बोधी नहीं होते। उल्टा और पशुओं की तरह यह भी उसके विषय में अज्ञानी और अबोधी ही रहते हैं।"

"मनुष्य आत्मा शक्तिमय है, इसलिए शक्ति तत्व के सम्बन्ध मे अज्ञानी या अबोधी रहकर कोई जन अपने आत्मा के रूप, उसकी भिन्न गतियों और उसके फलों वा परिणामों के विषय में भी अज्ञानी या आबोधी रहता है, यह आत्मा होकर भी अपने आत्मा को नहीं जानता, और उसके विषय में किसी सच्चाई को नहीं देखता और धनी, विद्वान और पद रखकर भी उस विषय में पशुओं की तुलना में कोई विशेषता नहीं रखता।"

अपने अस्तित्व का, अपनी आत्मा का ज्ञान पाए बिना जीना, पशु होकर ही जीना है। अपने आपका ज्ञान, अपनी आत्मा का ज्ञान, अपनी सुख लालसाओं का ज्ञान ही धर्म का ज्ञान होता है, इसलिए कहा गया है :-

"धर्म पाए बिना जीना, जन्म अपना यह है खोना
मनुष्य होकर पशु रहना, जन्म अपना यह है खोना।"

(बलदेव सिंह)

महोत्सव

परम पू० भगवान देवात्मा का 161 वाँ शुभ जन्म महोत्सव इस वर्ष 9 दिसंबर से 12 दिसंबर तक पूरे चाव-भाव से मनाया जा रहा हे

(मन्त्री)

एक महान लेखक के विचार

कनल जी लिखते हैं।

० मानव को स्वभावत : ही उच्च चारित्रिक शक्तियों की महानता में विश्वास नहीं होता। उसे तो नीति, राजनीति, कूटनीति, दुहरे मापदण्ड और सार्वजनिक कार्यो व प्रतिज्ञाओं के सन्दर्भ में भी पाखण्ड एवं विचारात्मक दुराव पर ही भरोसा होता है।

० हम यह नहीं मान सकते कि गुण्डापन हमेशा ही जीतता रहेगा, यद्यपि धर्मान्ध कट्टरतावादी ऐसे ही प्रचारित करते हैं। गुण्डापन को एक न एक दिन समाप्त होना ही है। कट्टरता तो एक प्रकार का पागलपन का दौरा है, जो धर्म एवं कट्टरपन्थी दोनों को ही लज्जित करता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि परम शक्तिशाली साम्राज्य भी अन्याय, क्रूरता व अनौचित्य की नीति पर चलने से धराशायी हो जाते हैं। क्या दिल्ली की सुल्तानशाही छिन्न-भिन्न नहीं हो गयी थी? क्या मुगल-साम्राज्य ध्वंस नहीं हो गया था? क्या बर्तानवी साम्राज्य नष्ट नहीं हुआ?

० किसी व्यक्ति के लिए यह चरम दुर्भाग्य की बात है कि उसका सही बातों व सही व्यक्ति में विश्वास नष्ट हो जाए। बड़े बड़े साम्राज्यों, रियासतों, सस्थाओं व व्यक्तियों को सदा ही इस अविश्वास नाश के बड़े ही दु:खद फल मिले हैं।

बहमनी-सम्राज्य का एक महान् मंत्री हुआ करता था जिसका नाम था महमूद गावां। वह मूलत: फारस का निवासी था। वह व्यपारी के रूप में दक्कन में आया था। महमूदशाह ने ख़वाजा जहान के वध के बाद एसे अपना मुख्य-मंत्री बना लिया था। उसने बहमनी साम्राज्य की पच्चीस वर्षो तक वफ़ादारी, निष्ठा व योग्यतापूर्वक सेवा की। पर उसकी मृत्यु बड़ी त्रासद थी। एक इतिहासकार ने लिखा है: -

"दक्कन के अमीर उससे ईर्ष्या करने लगे थे। कारण यह था कि वह बड़ी जल्दी ही बहुत ऊंची स्थिति तक पहुंच गया था। तो उन्होंने क्या किया कि उसकी तरफ से विजय नगर के राजा नारायण सिंह के नाम बग़ावत की बातों से भरा एक पत्र लिखा। महमूदशाह को उन्होंने यह पत्र दिखाया और उसकी हत्या का आदेश ले लिया।"

और उस बेवकूफ सम्राट् ने उन दुष्टों का विश्वास किया और उसके वध का फ़रमान जारी कर दिया। उसने एक सच्चे व्यक्ति में विश्वास खो दिया।

वध के समय उसने कहा, "मेरे जैसे बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु से मुझे कुछ फ़र्क नहीं पड़ता, किन्तु तुम्हारे लिए यह तुम्हारे साम्राज्य व तुम्हारी महिमा के नाश का कारण बनेगी।"

इतिहहासकार आगे कहता है: -

"उसकी भविष्यवाणी सच्ची साबित हुई। उसका सन् 1251 में वध किया गया था और उसकी मृत्यु के साथ ही बहमनी साम्राज्य की एकता और शक्तिसत्ता समाप्त हो गई।"

डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है: -

० "इस तरह युग का बहुत सच्चा आदमी हत्यारे के खड्ग द्वारा खत्म कर महमूद ने अपने

व्यक्तिगत अनुभव के बावजूद भी अपने ईर्ष्यापरायण अमीरों की उस धोखा-धड़ी पर यकीन किया, यह तथ्य इस बात को प्रमाणित करता है कि इन्सान की प्रकृति में सहज ही विश्वास कर लेने की ज़बदरस्त दुर्बलता मौजूद है। बुदबुदाने वाली निष्ठाएं समझदार दिलों को भी विषाक्त बना देती हैं। एक सही आदमी में विश्वास खो देने की कीमत महमूदशाह को अपने साम्राज्य की सुदृढ़ता खो कर चुकानी पड़ी। बहमनी-साम्राज्य छोटे छोटे राज्यों में बंट गया और धीरे धीरे समाप्त ही हो गया।

० ठीक बातों के सहीपन में यदि विश्वास खो जाए तो इससे भी मानवता की बहुत बड़ी हानि हो जाती है। कोई भी कार्य, जिसमें विश्वास तत्व का अभाव हो अथवा जिसमें नैतिक-मूल्यों में विश्वास निहित न हो, अपनी गरिमा और अपना स्थायित्व दोनों को खो देता है। ईश्वरविश्वास के द्वारा जो घृणा का तत्त्व पैदा होता है, वह केवल इसी कारण, क्योंकि ईश्वरविश्वासी अपनी ईश्वर-सनक के लिए मानवता की बलि चढ़ा देते हैं।

० ईश्वरविश्वास मानवता को मानव का धर्म नहीं समझता। मूलभूत समझने योग्य तथ्य यह है कि मानवता छोटे छोटे फिरकों व मतवादों के ऊपर विराजती है, मानवता सभी सम्बन्धों में न्याय व औचित्य के पालन द्वारा ही जीवित रह सकती है, मानवता को निर्मल आनन्द प्राप्त करने का अधि कार प्राप्त है और जो भी फिरकादारी इसमें आड़े आती हो, उसे उखाड़ फैंका जाना चाहिए। मानवता तभी प्रगति कर सकती है और फल-फूल सकती है, जब सभी इकाईयां सामूहिक हित के लिए जिएं। मानव की सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा सर्वश्रेष्ठ मानवता ही है।

० संकुचित मतवाद के विश्वासी अपनी अस्थायी सफलताओं पर खुशी मनाते हैं, तो मनाते रहे। प्रकृति का सार्वभौम नियम यह है कि केवल वे व्यक्ति अथवा वे दल ही जीवित रहेंगे, जो कि मानवता के लिये जीते हैं। मानवता के विरुद्ध काम करने वाले व्यक्ति व दल नष्ट हो जाएंगे। यही सच्चा आदर्श है। इस तथ्य में विश्वास खो देने पर कोई भी दल अपना मूल्य व अस्तित्त्व खो देगा। सामूहिक मानवता से अलग-थलग चलने पर बड़ी से बड़ी संस्थाएं भी छिन्न-भिन्न व नष्ट हो जाएंगी। सशक्त से सशक्त विचारधारा भी अस्तित्त्व सम्बन्धी इस महान नियम को भंग करके नाश से बच नहीं सकती।

० मैं एक प्रसिद्ध संस्था को जानता हूं जो कि उस नगर की समस्त संस्थाओं में शीर्ष स्थान रखती थी। उस संस्था का अध्यक्ष एक बहुत योग्य व्यक्ति था। उसने अपनी योग्यता और व्यक्तित्व से उस संस्था का शीर्ष स्थान बनाया था। अब जैसे ही उसकी सेवानिवृति का समय आया तो उसके ईर्ष्यालु विरोधियों ने उसको वहां से हटाने की कोशिशें की। वह व्यक्ति संस्था के लिए इतना कीमती था के उसको वहां से हटाये जाना हद दर्जे की मूर्खता थी। पर वह वहां से चला गया। अब उस विद्यालय की महिमा डगमाने लगी और वह संस्था अपनी उस पहली अवस्था को फिर कभी प्राप्त न कर सकी। प्रमुख पदों पर अयोग्य व्यक्तियों का अधिकार अपने आप ही अभिशाप उत्पन्न कर देता है।

० पूर्वीय देशों में बड़े से बड़े साम्राज्य भी निम्न शासकों के कारण दुर्बल और नष्ट हुए है। भारत में

एक बड़ा शानदार साम्राज्य चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य के अधीन विकसित हुआ। अशोक ने इसका विस्तार किया था। परन्तु अशोक के उत्तराधि -कारी बहुत दुर्बल और अयोग्य थे। वह मौर्यो के भव्यशासन- भार को सम्भाल नहीं सके और परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य ताश के पतों के महल के समान धराशायी हो गया।

० भारत का एक दूसरा साम्राज्य था गुप्त साम्राज्य। गुप्त काल भारत का सुनहरी काल समझा जाता है। यह प्रबल साम्राज्य भी नष्ट भ्रष्ट हुआ क्योंकि अन्तिम गुप्त सम्राट् स्कन्द्रगुप्त के उत्तराधि -कारी कमजोर और निकम्मे थे। उनकी दुर्बलताओं ने सीमावर्ती राजाओं के लिए रास्ता साफ कर दिया जो कि ऐसे उचित अवसर की ही खोज में थे कि कब वह केन्द्रिय साम्राज्य से अपने सम्बन्ध काट कर अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दें। एक विशाल सशक्त केन्द्रीय गुप्त साम्राज्य विलुप्त हो गया और उसका स्थान छोटे छोटे राज्यों ने ले लिया।

० दिल्ली की सुल्तानशाही की भी यही कहानी है। जब अयोग्य शासक गद्दीनशीन हुए तो यह साम्राज्य भी नष्टभ्रष्ट हो गया। बड़े बड़े कार्यो और धार्मिक संस्थाओं की भी यही हालत है। जब कोई क्षुद्र, अंहकारी व्यक्ति सत्ता की कुत्सितवासना के वशीभूत होकर योग्य व्यक्ति के हाथों से सत्ता छीन लेता है और उसे अयोग्य हाथों में धारण कर लेता है तो वह महान् कारज की तबाही कर डालता है।

० अंह अनुराग एक रोग है। इससे व्यक्ति की दृष्टि रुग्ण हो जाती है।, चाहे वह मैदानी इलाके का वासी हो ओर चाहे हिमालय पर्वत का चाहे वह बाज़ार में हो या मन्दिर में, चाहे अकेला हो चाहे समूह में। हमारे समाज में एक बार ऐसी ही दुर्घटना घट चुकी है। भगवान देवात्मा का एक विशिष्ट शिष्य था। वह जब भी बोलने को खड़ा हेाता, सभा को मन्त्रमग्ध कर देता था। सभी सामाजिकसदस्य उसके प्रति सद्भाव व श्रद्धा रखते थे। परन्तु एक बार व बड़े कुछ सन्देहों के घेरे में घिर गया।

० नीच घृणा बड़े से बड़े नेता के भी जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण को नष्ट कर देती है। इस नीच घृणा के परिणामस्वरूप हिन्दु एवं मुस्लिम भारत स्वतन्त्रता के परिपक्व फल को खो देंगे।

० वास्तविक महान नेता हिसाब किताब तमाम साफ़ रखते हैं। वह अपनी आंखों के सामने नैतिक सिद्धान्तों का दहन देख कर शान्त नहीं बैठ सकते हैं। ऐसे नेता एक दम गिने चुने होते है। पर किसी भी नैतिक समाज की वास्तविक शक्ति यही होते हैं।

० वह नैतिक संस्था कितनी अभागिनी है जिसमें ऐसे नैतिक आदर्शो के हत्यारे उत्पन्न होते हैं। आज तक विश्व भर में कोई भी संस्था अपनी उच्च मर्यादाओं और परम्पराओं की रक्षा करने में सफ़ल नहीं हुई है। कारण यह कि उसके नेता ही उच्च मर्यादाओं के अनुकूल आचरण नहीं कर पाते हैं।

० अपने आदर्शो की गरिमा समझने वाले समस्त जनों को न्याय, अहिंसा व सात्त्विकता के मार्ग पर चलना होगा। प्रकृति में केवल न्याय व सात्त्विकता के तत्त्व ही सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। अन्याय तथा क्रूरता तो अपने धारकों को नेस्तनाबूद करके छोड़ते हैं।

परिवार में बज़ुरगों की भूमिका

परिवार की सुख शान्ति को बनाए रखने के लिए बज़ुरगों की भी अहम भूमिका है। यह ज़िन्दगी का एक ऐसा पड़ाव है कि जिसमें बज़ुरग न तो परिवार के साथ रह सकते हैं और न ही अकेले। आधुनिक युग में माता पिता अब अधिकतर आर्थिक तौर पर बच्चों पर कम निर्भर हैं। समय और अनुभव ने इतना तो सिखा दिया है कि जब माता पिता अपना सब कुछ बच्चों के हवाले कर देते हैं, तो अकसर बच्चे उन्हें बोझ समझने लगते हैं और अपनी छोटी छोटी आवश्यकताओं के लिए भी उन्हें बच्चों पर निर्भर करना पड़ता है। परन्तु आर्थिक तौर पर आत्म निर्भर होकर भी माता पिता बच्चों से स्नेह प्यार और सम्मान की आशा रख सकते हैं। ज्यों ज्यों उमर बढ़ती है और बज़ुरग अधिक कोई काम काज नहीं कर सकते तो वह भी चाहते हैं कि बच्चे उनके पास बैठें, उनकी कुछ सुनें कुछ अपनी सुनाएं, परन्तु अकसर बच्चों के पास समय और अच्छे भावों का अभाव होता है, जो वृद्ध उमर को बंहुत कष्ट-दायक बना देता है।

एक एक परिवार में बढ़िया नसल का कुत्ता पाला जाता है, तो उसकी खूब देखभाल होती है, उसको बढ़िया से बढ़िया खाना दिया जाता है, क्लिनिक में ले जाया जाता है परन्तु बज़ुरगों की अहमियत कुत्ते जैसी भी कई घरों मे देखने को नहीं मिलती। बज़ुरगों की उपयोगिता नहीं, इसलिए उनकी तरफ ध्यान नहीं।

स्वार्थ और अपने सुखों की चाट में अन्ध बच्चों के कारण ही दिन पर दिन ओल्ड-होमज़ (बूढ़ों के लिए निवास स्थान) की गिनती बढ़ती जा रही है। उन मां बाप को इन घरों में छोड़ दिया जाता है, जिन्होंने उंगली पकड़ कर बच्चों को चलना सिखाया था, जिन्होंने बच्चों के एक ही सवाल का हज़ारों बार जबाब दिया था। यदि ऐसा दुर्व्यहार अपने ही बच्चों से बज़ुरगों को मिलता है, तो यह स्थिति चिन्ताजनक तो है ही, परन्तु परिवारों के अच्छे वातावरण को तबाह कर रही है। दीर्घायु कई बार अभिशाप बन जाती है।

यदि देखा जाए तो वृद्धजन, किसी भी सभ्य एव सुसंस्कृत समाज की अमूल्य निधि होते हैं, इस अमूल्य निधि की अवहेलना निंदनीय है। इस स्थिति को पैदा न होने देना पारिवारिक जनों का नैतिक दायित्व है। आख़िर इन वृद्धजनों ने अपना सम्पूर्ण जीवन उस परिवार पर न्यौछावर किया है और वर्तमान में जो सुख सुविधाएं परिवार भोग रहा है, उस वर्तमान के वह सृजनहार हैं। उनके एहसानों को भुलाकर नई पीढ़ी को कृतघ्न नहीं बनना चाहिए। उनका रोम रोम उनका कृतज्ञ होना चाहिए, वह आदरणीय हैं, बेशक अपनी उमर के अनुसार वह बिमार, हस्तक्षेप करने वाले या उपदेशक ही बन गए हों।

समय के अनुसार बच्चों के विचार बदलते रहते हैं, परन्तु बज़ुरग उस रफ्तार से नहीं बदलते, परन्तु उन्हें आऊट आफ डेट करार नहीं दिया जाना चाहिए, यह फासला तो सदा से रहा है और आज की नौजवान पीढ़ी का अपने बच्चों से इससे भी अधिक होगा, क्योंकि विश्व में परिवर्तन की गति बहुत तेज हो गई है। यदि यह बात युवा पीढ़ी याद रखे तो उनके व्यवहार में अन्तर अवश्य आएगा।

बेशक आज के युग में कामकाजी स्थितियां ऐसी हैं कि संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, परिवारिक जन छोटी छोटी इकाईयों में अलग अलग स्थानों पर पलायन कर रहे हैं, जब माता पिता नौकरियों से रिटायर

होकर खाली होते हैं तो उनके बच्चे अपनी जीविका के लिए भटकने लगते हैं। वृद्ध अपना बसा बसाया घर और वातावरण छोड़ना नहीं चाहते, कहीं असुरक्षा का डर भी उन्हें सताता है कि यदि अपना सब कुछ छोड़कर वह बच्चों के पास चले गए तो उनको पूरा सत्कार और स्नेह मिल भी पाएगा या नहीं। कई बार अपने बच्चों की पालना के लिए माता पिता को रखना तो चाहते हैं परन्तु ज़रूरत पूरी होने पर उनकी अवहेलना करने लगते हैं, जो बहुत दुखदाई स्थिति होती है।

हिमाचल प्रदेश में एक महत्वपूर्ण विधेयक पारित किया गया था कि जो माता पिता बच्चों पर आश्रित हैं, उन्हें कानूनी तौर पर उनका खर्चा वहन करना होगा। पर कानून वुद्धों को राहत नहीं दिला सकता। उन्हें खर्च के लिए राशि ही नहीं, सेवा और सम्मान भी चाहिए। यदि वृद्ध इस संसार से अनाश्रित जाएं, तो परिवार में सुख शान्ति नहीं रह सकती, क्योंकि यही अनादर अगली पीढ़ी को अपने बच्चों से सहना पड़ेगा।

इसमें भी नारी की भूमिका अहम है। नारी पत्नी, बहन, बहू और मां के रूप में सारे रोल अदा करती है। यदि वह यह समझे कि जिस पति पर वह अपना एकाधिकार समझती है, वह पहले अपने माता पिता का बेटा भी है। इसलिए उसके माता पिता के प्रति कुछ कर्त्तव्य हैं। यदि नारी अपना सही रोल अदा करे तो पुरुष उसका सहयोग अवश्य देता है। नहीं तो अकसर पति अपनी पत्नी और माता पिता के बीच के पाटों में पिस कर रह जाता है और घर सदा क्लेश का अड्डा बना रहता है।

बजुरगों की भूमिका क्या होनी चाहिए?

यह भी सत्य है कि वर्तमान युग में जीने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। पति और पत्नी दोनों यदि कामकाजी हों तो संघर्ष और भी बढ़ जाता है। ऐसे संघर्ष-मय युग में बजुरगों की भी भूमिका महत्वपूर्ण है। आज रिटायरिंग उमर में भी माता पिता अच्छी सेहत रखते हैं। रिटायर होने का यह अर्थ नहीं कि बजुरग हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं। जहां तक सम्भव हो वह अपनी उपयोगिता बनाए रखें। यदि बहू भी कामकाजी है और वह थक कर आती है, तो सास ससुर के प्यार भरे दो शब्द उसकी थकान दूर कर सकते हैं। आने पर यदि सास उसे गर्म चाय वा दूध का प्याला बनाकर दे, तो उसकी थकावट दूर हो जाती है। सवेरे जितना काम बहू कर जाए, कुछ ज़िम्मेदारी सास अपने ऊपर ले ले और सुसर कुछ बाज़ार के कामों में सहायता कर ले तो सारे परिवार को तनाव से बचाया जा सकता है।

कभी कभी बच्चों की ज़िम्मेवारी लेकर स्वंय बेटे और बहू को घूमने फिरने के लिए प्रेरित करें तो बच्चे अवश्य कृतज्ञ अनुभव करेंगे और पोते पोतियों से बजुरग जितनी निकटता बढ़ा लेवें, उन्हें भावात्मक सन्तुष्टि मिलती है, और बच्चों को समय माता पिता नहीं दे सकते, दादा दादी अधिक दे सकते हैं।

2 - 3 वर्ष पहले एक दम्पति ने अपने इकलौते बेटे की शादी की, परन्तु सास जो अच्छी तन्दरुस्त है, उसने आते ही बहू की नौकरी के बावजूद सारे काम का बोझ बहू पर डाल दिया, परिणाम क्या हुआ, चन्द महीनों में ही वह अपने पति को लेकर अलग हो गई। अब सारी उमर के लिए उस नई आई बहू को सास ने अपने से दूर कर लिया।

वहीं एक और परिवार के बारे में जानने का अवसर मिला। बहू घर में आई और पूरा एक साल उसने किसी काम की ज़िम्मेवारी नहीं ली, परन्तु सास ने बहुत सहनशीलता से काम लिया और धीरे धीरे वह लड़की थोड़ा थोड़ा काम करते करते अब सारे घर को सम्भाल रही है और वह अपनी सास की बेहद इज्जत करती है, वास्तव में उसने कभी काम नहीं किया था और उसने धीरे धीरे देखकर काम सीखा। बजुरगों के भीतर भी सहनशीलता, स्नेह होना बहुत आवश्यक है। वह अपने अनुभवों को बच्चों पर उपदेशों से लादें नहीं, बल्कि उन्हें स्वंय उनके अनुभवों से लाभ उठाने दें।

बजुरगों में भी समझौते की भावना की आवश्यकता है। बच्चों से ही अपेक्षा न रखें कि सदा वह आपके विचारों के साथ चलें। यह न भूलें कि आपने वर्तमान मे जीना हैं। नई पीढ़ी की सोच के साथ कुछ सांमजस्य बनाएं, अन्यथा परिवार में मिसफिट हो जाऐंगे। जब कुछ बच्चों की जायज़ बातें आप मानेंगे तो उन्हें भी कुछ अपनी मनवाने में सक्षम होंगे।

अकसर देखा गया है कि बड़ों की टोकाटोकी की आदत बन जाती है। आज की पीढ़ी सीधी टोकाटाकी सहन नहीं करती। कई बार नौकरों की शिकायतें बजुरग करते रहते हैं, यदि बच्चे उनके अनुसार कोई ऐक्शन करते हैं, नौकर भाग जाते हैं, और कलह का एक कारण और बढ़ जाता है।

बच्चों के कामों की सराहना करें। बहू की सेवाओं की सराहना करें। यदि किसी ने बिमारी आदि में विशेष सेवा की है तो अपनी तरफ से कोई तोहफा आदि लेकर दें। यदि हम सोचते हैं कि बच्चे माता पिता को तोहफे दें तो यदि बड़ों की आर्थिक हैसीयत है तो वह भी बच्चों को छोटा मोटा ही अपने स्नेह के प्रतीक के रूप में तोहफा दें।

छोटे बच्चों से बजुरग ज्यादा अपेक्षा न रखें, कभी कभी छोटे बच्चे अपनी खेलकूद में बड़ों की अवहेलना कर जाते हैं, इसको गंभीरता से न लें, ऐसी बातें भी एक दूसरे से दूर करती हैं और अपने भीतर भी तनाव पैदा करती हैं।

आजकल सब को एक ही लाठी से नहीं हांक सकते। हरेक के मनोविज्ञान को समझने की आवश्यकता है। इस मशीनी युग में अकसर बड़े शिकायत करते हैं कि बेटा बहू उनके पास नहीं बैठते। इस समस्या से समझौता करें। अपने आपको पढ़ने, लिखने और कोई काम में व्यस्त रखें। आजकल तो टी०वी० बजुरगों के लिए वरदान है। जब अकेलापन हो तो आप अच्छा कोई प्रोग्राम देखकर उससे मुक्ति पा सकते हैं।

संक्षेप में

1) आज की पीढ़ी से उचित सीमा तक सहयोग बढ़ाएं

2) अपने विचारों को उदार बनाएं

3) व्यंग्य और डांट फटकार न करें।

4) बिना मांगे राय न दें, यदि आप कोई राय देते हैं, और उसको कोई नहीं मानता, तो तनाव पैदा न करें।

5) छोटों की भावनाओं को भी समझने का यत्न करें।

यदि बच्चे और माता पिता अपना अपना व्यवहार सुधारने के लिए आत्म समीक्षा करते रहें, तो परिवार में बहार आ सकती है।

सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

24.08.2011 से 28.08.2011 मल्लेका (महिणा खेड़ा) 24 अगस्त 2011 को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भटिंडा से मल्लेका पहुंचे, वहां से श्रीमान मेहर सिंह जी उनके साथ मिल गए। महिणा खेड़ा के एक सीनियर सैंकण्डरी स्कूल में नीति शिक्षा सम्बन्धी सभा की गई। इसमें सम्मान भाव पर ज़ोर दिया गया। बच्चों को अपने माता पिता वा अध्यापकों को प्रणाम करने की प्रेरणा की गई। बच्चों ने इस सम्बन्धी प्रण लिए।

ऐलनाबाद :- यहां दोनों धर्म सम्बन्धी जब पहुंचे वहां विशाल जी ने पहले ही सभा का प्रबन्ध कर रखा था। और अधिकारी जनों को छोड़ 10-15 बच्चे भी सभा में बुलाए हुए थे। यहां उच्च संगत वा उच्च भावों की अवश्यकता के विषय में बताया गया। आगे से ऐसी सभाएं रखने की इच्छा जाहिर की।

पदमपुर :- (राजस्थान) यहां से दोनों धर्म सम्बन्धी पदमपर पहुंचे। डाक्टर मुनशा सिंह जी ने सभा की सूचना धर्म सम्बन्धियों वा अन्य जनों को पहले ही दे दी थी। 30 के लगभग जन सभा में आए। श्रीमान बलबहादुर सिहं जी ने नीच गति क्या होती है और उससे क्या आत्मिक हानि होती है, इस विषय पर सभा कराई। देवात्मा के देव असरों से इस हानि से मोक्ष मिलती है। बहुत सुन्दर और प्रभावशाली मण्डल बना। फिर श्रीमान मेहर सिंह जी ने अपने भावों का प्रकाश किया।

25 अगस्त 2011 :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने शुक्रगुजारी के भाव के सम्बन्ध में कराई। हाजरीन ने विशेष रूप से अपने उपकारियों को याद किया।

11 बजे स्थानीय I.T.I कालिज में नीति शिक्षा सम्बन्धी सभा हुई। लड़के लड़कियों ने अच्छा response दिया और बार बार तालियां बजाते रहे।

जुआए वाला :- 3 बजे यहां मेहर सिंह जी के सम्बन्धियों को साथ लेकर दोनों धर्म सम्बन्धी यहां पहुंचे। यहां सभा में मिथ्या और पाप के सम्बन्ध में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। श्रीमान मेहर सिंह जी ने इस सम्बन्ध में बहुत रोचक घटनाएं बताई।

8.30 शाम को पदमपुर में यह सभा देव धर्म मन्दिर में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 40-45 जन शामिल हुए। सभापति जी ने बताया कि नेचर की सब घटनाएं उसके नियमों के अनुसार होती हैं, इसलिए नेचर पूर्ण भरोसे के योग्य है। इसका कोई सृष्टा नहीं। नेचर में विकास और विनाश का परिवर्तन हैं, नियमों के अनुसार होता है। विज्ञान नेचर पर आधारित है, और देव धर्म विज्ञान पर आधारित है। देव धर्म की परम हितकर शिक्षा का बहुत सुन्दर शब्दों में ब्यान किया।

26.8.2011 :- 1 बजे पदमपुर के सीनीयर सैंकण्डरी स्कूल में नीति शिक्षा करवाई गई। श्रीमान मेहर सिंह जी ने सत्य बोलने के लाभ बताए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने उच्च जीवन की बरकतों की सुन्दर घटनाएं बताई। प्रिंसीपल साहिब ने श्रीमान जी का धन्यवाद किया और फिर प्रोग्राम रखने की इच्छा प्रगट की।

26.08.2011 :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर जी ने करवाई और बताया कि परम पू० भगवान देवात्मा के भीतर जो देव ज्योति प्रगट हुई है, वह

दुर्लभ है। देव असरों से उच्च परिवर्तन आते हैं। सभापति जी ने और उदाहरणों के भिन्न अपना परिवर्तन हृदय स्पर्षिय शब्दों में बताया।

26.08.2011 शाम 8.30 बजे :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस सभा में विश्व के स्थूल और सूक्ष्म रूप के विषय में बताया। सूक्ष्म रूप का वर्णन करते हुए बताया और देव प्रभावों द्वारा ठोस कारज का वर्णन किया। स्थानिय धर्म सम्बन्धियों के परिवर्तन बताए, मेहर सिंह जी अपने एक दो पहलुओं में परिवर्तन को बताने के लिए मजबूर हो गए।

27.08.2011 :- सवेरे की सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने माता पिता से शरीरिक, मानसिक वा हार्दिक पाई हुई पूंजी के विषय में बताया। पूंजी पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है। देवात्मा ने ऐसा वातावरण पैदा किया है, जिसमें उच्च परिवर्तन आता है। मेहर सिंह जी ने बताया कि पूंजी का रोल 25% है, परन्तु वातावरण का रोल 75% है। शाम को श्रीमान शिव दर्शन सिंह जी की गऊशाला और वृद्ध आश्रम देखने के लिए गए, जिससे बहुत अच्छे असर प्राप्त हुए।

रात 8.30 बजे की सभा में हाज़री लगभग 50 आदमियों की थी। इस सभा में बताया कि जीवन सम्बन्धों में है, उन्हें त्यागने में नहीं। सम्बन्धों में अच्छे व्यवहार ही धर्म है, यह सम्बन्ध तत्व द्वारा परम पू० भगवान देवात्मा ने हितकर शिक्षा दी है। उन्होंने फरमाया है कि "उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं" उच्च जीवन का सभापति जी ने प्रभावशाली ढंग से ब्यान किया।

28.8.2011 :- यह पदम पुर में आख़री सभा थी। इसमें सभापति बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि परम पू० भगवान देवात्मा ने दूसरों के शुभ गुणों पर चिन्तन के साधनों पर बहुत ज़ोर दिया है, उपकार स्मरण वा शुक्रगुजारी के साधन करवाए हैं। उच्च भावों की प्राप्ति ही सच्चा पोज़टिव दृष्टीकोण पैदा करती है। सभापति जी ने कईयों के उच्च गुणों का भाव पूर्ण होकर वर्णन किया। श्रीमान मेहर सिंह जी ने भी गुणधारी गरीब आदमी की मदद का वायदा किया। उपस्थित जनों ने 1330 रु० देव धर्म के लिए दान दिया।

मल्लेका :- शाम को दोनों धर्म स्मबन्धियों ने मल्लेका पहुंच कर जीत सिंह जी के घर सभा की। खेतों की ढाणी से श्रीमान बलदेव सिंह जी भी पहुंच गए थे। सभा स्थान खचाखच भरा हुआ था। सभापति जी ने बताया जीवन का भला अच्छी संगत में ही होता है। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बलजी के जीवन पर उच्च संगत के प्रभावों का वर्णन किया। बताया कि लड़के, लड़कियों के लिए उच्च संगत की बहुत अवश्यकता है।

26.8.2011 :- सुबह सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने देव धर्म की महिमा का ब्यान किया। स्थानिय सेवकों के जीवनों में आए परिवर्तन का ज़िकर किया। बहुत प्रभावशाली वातावरण बना।

उपरोक्त सारा प्रोग्राम गुरू की कृपा से उत्साह वा प्रेरणादायक रहा।

चण्डीगढ़ :- यहां हर ईतवार को अकसर सभा होती है। 9 अक्तूबर की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें इस बात पर रोशनी डाली गई कि कि किसी जन की भी आत्मिक रक्षा परम पू० भगवान देवात्मा से परे रहकर सम्भव नहीं है। मनुष्य प्रकृति को समझाने का यत्न किया गया। हाजरीन काफी प्रभावित हुए।

नया नंगल :- 9 अक्तूबर रात को श्रीमान जी, बलदेव सिंह जी, श्री कुलदीप जी कौशल की प्रार्थना पर यहां पहुंचे। रात को एक सभा की गई। -6 परिवार पति पत्नी आकर शामिल हुए। सब इंजनीयर या अध्यापक थे।

सभा में बताया गया कि मनुष्य को अपनी परिचालक शक्तियों का ज्ञान नहीं। न वह अपने आप उन्हें जान ही सकता है। उनको जाने बिना मनुष्य दुखों से नहीं बच सकता। कोई धर्म मनुष्य को अपना आप नहीं दिखाता, न ही दिखा सकता है। धर्म कितने बढ़ जाएं, वह मनुष्य को सुखी नहीं कर सकते। देव धर्म का उन परिचालक शक्तियों को दिखाने वा उनसे बचाने का काम पेश किया गया। उपस्थित जनों ने काफी लाभ उठाया और अगले दिन सुबह सभा रखने की प्रार्थना की।

10.10.2011 :- सुबह एक छोटी सी सभा की गई, जिसमें बताया गया कि धर्म उच्च भावों वा पर सम्बन्धी भावों का नाम है। उच्च भावों के बिना कोई धर्म नहीं होता। उच्च भावों का रूप पेश किया गया। हाजरीन काफी प्रभावित हुए। उन्हें कुछ पत्रिकाएं व पुस्तकें भी दी गई। फिर यह प्रोग्राम रखनेके लिए कहा गया। कुलदीप जी ने 500 रु० अपनी पत्रिकाओं का चन्दा दिया। इसके बाद श्रीमान जी चण्डीगढ़ वापिस आ गए।

कल्याण मलका : श्रीमान बलदेव सिंह जी 12 अक्तूबर सुबह चण्डीगढ़ से रवाना होकर मोगा होते हुए कल्याण पहुंचे। वहां ठहरकर धर्म सम्बन्धियों को मिले और शाम को सभा रखी। इस सभा में बताया गया कि गुरू महाराज ने फरमाया है कि नेचर के भीतर उसके अटल नियम काम करते हैं, जो उन नियमों को जानते हैं और उनके अनुसार चलते हैं, वह लाभ उठाते हैं और उन्नति करते हैं, जो नियमों से आंखें बन्द कर लेते है वा लापरवाह हो जाते हैं, उनका नाश हो जाता है।

नेचर का एक नियम है, संगत की रंगत का। इसको हृदय में उतारकर अच्छी संगत से जो जुड़ते हैं, वह कुछ का कुछ बन जाते हैं। बड़ी सुन्दर घटनाएं बताई गई। किस प्रकार नौजवान बच्चे न चाहकर भी बुरी संगत का शिकार हो जाते हैं। भली वा उच्च संगत का आकाल पड़ा हुआ है। देव समाज की संगत नायाब है और परम हितकर है। इस सचाई को हृदय में उतारने की अवश्यकता है।

13 अक्तूबर सुबह 8.30 बजे सभा की गई। इसमें बताया गया कि कुछ किए बिना भला काम नहीं होता। केवल सभा में आकर भला नहीं आता। शुभ संग्राम की अवश्यकता है। सेहत, विद्या, और धर्म कड़ी लगन और मेहनत की मांग करते हैं। हमें कुछ पाप छुड़ाने, मिथ्या छुड़ाने वा परोपकार के कुछ काम करने चाहिए। प्रतिदिन जो भेंट का साधन करने का प्रण किया था, उसको भूलना नहीं चाहिए। पंक्षियों को दान पानी सबको पाना चाहिए। पत्रिकाएं वा पुस्तकें पढ़ने की सब को आवश्यकता है। फिर महोत्सव मुबारक की तिथियां बताई और महोत्सव पर पंहुचने की प्रेरणा की। हाज़िर जनों ने गर्म जोशी से पहुंचने का उत्साह दिखाया।

स्थानीय बच्चों के स्कूल के साथियों से मिलकर फैसले किए। इस प्रकार यह संग्राम कुछ न कुछ सफल हुआ।

गोनियाना मण्डी :- दुपहिर को खाना खाकर श्रीमान बलदेव सिंह जी 12.30 बजे गोनियाना

पहुंचे। यहां रात के 8 बजे सभा रखी गई। इसमें 25 के लगभग जन शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य की बड़ी समस्या है कि वह नहीं जानता के उसे कौन चला रहें है, न उन कारणों से वह बाहर निकलना चाहता है। आत्मिक रूप से अन्धे जन किस प्रकार अपने सम्बन्धों में दुखों का कारण बनते हैं। कितने धर्म पैदा हो जाएं, परन्तु मनुष्य दुखों से नहीं बच सकता। सत्गुरू! आप अद्वितीय हो, आपकी शिक्षा अद्वितीय है, आपकी अद्वितीय ज्योति जिससे मनुष्य को अपनी परिचालक शक्तियां साफ दिखाई दे जाती हैं। उनसे बचने की इच्छा पैदा हो जाती है। किस प्रकार नीच शक्तियां मनुष्य का मुर्दा ख़्वार करती हैं। उसकी कई उदाहरणें पेश की गई। अपनी परिचालक शक्तियों के जाने बिना साधु भी आपस में झगड़ पड़ते हैं। गुरू दर पर आकर मनुष्य को अपनी योग्यता अनुसार नीच शक्तियों का भयानक रूप नज़र आने लगता है। वह नष्ट भी हो सकती हैं और नई शक्तियों पैदा होने लगती हैं। यह सभा काफी दिलचस्प थी, हाजरीन काफी प्रभावित हुए और चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई।

उस सभा में महिमा सवाई से गुरूदेव सिंह जी मान और उनके सेवक पुत्र आकर शामिल हुए।

14.10.2011 सुबह 8.30 बजे सभा रखी गई। इसमे बताया गया कि धर्म पाने की इच्छा पैदा होने की अवश्यकता है। पहले हमारा हृदय शारीरिक, संसारिक और सुखमूलक इच्छाओं से भरा हुआ है। यदि इच्छाएं कुछ घटेंगी तब ही धर्म की इच्छा पैदा होने का स्थान बन सकेगा। हम सब रोगी रूहें हैं। उन रोगों को बार बार जानकर ही, उनसे बचने की इच्छा पैदा हो सकती है। यह रोग गुरू महाराज की ज्योति बिना दिखाई नहीं दे सकते और न उनका भयानक रूप नज़र आता है। गुरू महाराज के प्रभाव लगातार पाते रहने से बार बार वर्षो संगत करते रहने से रोग दिखाई देने लगते हैं। अधिकारी जनों में उनसे मुक्त होने की इच्छा जाग सकती है। हम हानिकारक जीव हैं। हमने हानि घटा घटा कर कुछ हानि रहित बनना है। हितकर बने बिना धर्म नहीं आ सकता। पक्षियों को दाना डालना, पानी डालना, लोगों को पापों से बचाना, मिथ्या से बचाना, इससे हम हितकर जीव बनते हैं। इन हितकर कामों को बढ़ाना है। यह सभा अच्छी प्रभावदायक थी। श्रीमान मुख़्तार सिंह जी महिमे से आकर शामिल हुए।

रात को फिर सभा रखी गई। तीन जन महिमा सवाई से आकर शामिल हुए। इस सभा में धर्म की महिमा बताई गई। धर्म के बिना मनुष्य का जीवन पशुत्व का जीवन है। धर्म का अर्थ है अच्छा बनना। अच्छा उच्च विचारों से बना जा सकता है। अच्छे व्यवहार उच्च भावों से होते हैं। सम्मान, श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी के भावों की अवश्यकता के विषय में बताया गया। उसकी सुन्दर घटनाएं बताई गई। गुरू महाराज का कारज उच्च भावों को पैदा करने का है और नीच भावों के घटाने का है। इस संगत से जुड़कर उच्च भाव कुछ पैदा होते हैं, तो जीवन सुखमय हो जाता है।

15 अक्तूबर सुबह फिर एक सभा की गई। मुख़्तार सिहं भी महिमा सवाई से आ गए। इस सभा में बताया गया कि प्रभाव क्या होते हैं, वह क्या नतीजा पैदा करते हैं। देव जीवन के देव असर हैं। उनको समझने वा जानने की अवश्यकता है। वह मनुष्यों के लिए किस क़दर अवश्यक है। वह क्या करामात करते हैं। सभापति जी के अपने जीवन को और देव असरों ने और हज़ारों मनुष्य जीवनों को प्रभावित किया है,

उसका चित्रण किया। यह आखरी सभा थी, प्रभाव दायक मण्डल बना। 400 रु० दान में प्राप्त हुए। दुपहिर को श्रीमान जी डबवाली के लिए रवाना हो गए।

डबवाली :- श्रीमान बलदेव सिंह जी 4 बजे के लगभग चटाला रोड पर मन्दिर में पहुंचे। केसूपुरा से श्रीमान जागीर सिंह जी पहले पहुंच चुके थे। उन्होंने स्थानिय सेवादार से धुलाई आदि करवा कर मन्दिर को साफ किया। शाम को 5 बजे सभा रखी गई।

इस सभा में बताया गया कि दुनियां में पाप का सागर ठाठें मार रहा है, उसमें लाखों करोड़ो जन गोते खा रहे हैं और बर्बाद हो रहे हैं। कोई पीर, पैगम्बर वा गुरू उनको बचा नही सकता। भगवान देवात्मा विकास क्रम में आर्विभूत हुए हैं। वह पाप और मिथ्या के प्रति कट्टर शत्रुता की योग्यता लेकर आए हैं। वह पाप को ग़ारत करते हैं। उनकी शक्ति उनकी पाप के प्रति घृणा और दुख के असर जब मनुष्य के हृदय में पहुंचते हैं, उनको पाप और मिथ्या का जीवन कचोटने लगता है। कैसे गुरू महाराज मनुष्यों को बचाते हैं इसके सुन्दर उदाहरण पेश किए गए। अगले दिन फिर सभा रखी गई।

16.10.2011 ईतवार :- सुबह 9 बजे सभा रखी गई। महिमा सवाई से श्रीमान मुख़्तार सिंह जी भी सभा में आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि पहिया बनाने वाले का, फिर छकड़ा बनाने वाले, सड़क बनाने वाले का, लोहे की पटरी बनाने वाले और स्टीफनसन जिसने भाप की शक्ति खोजी, का मनुष्यता पर बैलों, ऊंटों वा घोड़ों पर बहुत बड़ा महा उपकार है। फिर सभापति जी ने बताया कि मनुष्य को कोई ईश्वर नहीं, उसकी शक्ति चलाती है। इन शक्तियों का न कोई ज्ञान है, न उनके घटने, बढ़ने की ही कोई होश है। मनुष्य बिल्कुल बेसुध है। उसी प्रकार परम पू० भगवान देवात्मा का भी मनुष्यता, पर महा उपकार है, वह नीच शक्तियों से मानवता को बचाने की समर्थ्य रखते हैं। मानवता का परम हित करते हैं। मनुष्य स्वंय तो अन्धेरे में ही ज़िन्दगी बर्बाद कर देते हैं।

दूसरी सभा , एक परिवार के भीतर रखी गई, इसमें सेहत के नियमों की जानकारी दी गई। पुराने धर्म क्यों मिथ्या हैं, उनके विषय में बताया गया। हमारे घरों में बर्तन, वस्त्र, घर, चूल्हे, चारपाईयां, दवाईयां सब बदल गए, परन्तु धर्म वहीं खड़े हैं। धर्मो को विज्ञान पर आधारित होना ज़रूरी है।

सभा के बाद श्रीमान जी चण्डीगढ़ के लिए रवाना हो गए।

- किसी की कोमल बातों से धोखे में नहीं आना चाहिए, सांप की कोमलता से दूर रहना चाहिए।
- लोहे की तलवार उतनी नहीं लगती, जितनी जीभ की धार लगती है। तलवार का घाव भर जाता है, किन्तु बोली का घाव नहीं भरता।
- पैर फिसल जाए तो फिर उठाया जा सकता है, ज़ुबान फिसल जाने पर शब्द वापस नहीं आते।
- प्रत्येक मनुष्य को अपनी करनी का फल भुगतना पड़ता है, जो दूसरों के लिए गड्डा खोदता है, वह स्वंय उसमें गिरता है।
- कहीं खुलकर अपनी राए नहीं रख पाते, कहीं कुछ गल्त होता हो तो रोक नहीं पाते, सहमत होते रहते हैं, ज़मीर को मारकर बिना आयना दिखाए, किसी को अपनी हरकतों का कैसे पता चलेगा।

Published on 5th of the month
20
नवम्बर – 2011
WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 09/011
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का प्रोग्राम

शुक्रवार 9 दिसम्बर 2011

प्रवेश सभा 4.30 बजे शाम

शनिवार 10 दिसम्बर 2011

1. पहली सभा सुबह 8.30 बजे

विषय: परम पू० भगवान देवात्मा का परम अवश्यक वा जीवन दायक सम्बन्ध

2. पब्लिक लैक्चर – शाम 4 बजे

वक्ता: श्रीमती सुरजीत बराड़

3. शाम 7.30 बजे भक्ति संगीत

ईतवार 11 दिसम्बर 2011

विशेष दिन

6.30 सुबह

सूर्य निकलने से पहले, जो कि आत्मिक जगत के सूर्य भगवान देवात्मा के जन्म का समय है, बैंड बाजा, कीर्तन, शुभ कामनाएं और जय ध्वनि।

1. पहली सभा 8.45 बजे सुबह

विषय: भगवान देवात्म का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की अवश्यकता, धन और जन की अपील

2. दूसरी सभा 1.30 बजे
बच्चों की सभा

3. पब्लिक लैक्चर शाम 4 बजे
वक्ता : डा० विनोद जी खेड़ा

सोमवार 12 दिसम्बर 2011

1. पहली सभा 8.30 बजे सुबह
सेवक सेविकाओं के ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति वा परिवारिक अनुष्ठान

2. दूसरी सभा

विषय : देव प्रभावों के द्वारा मनुष्यात्माओं में परिवर्तन

3. भाव प्रकाश

4. देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट: 1) कृपा करके सब सेवक और सेविका अपनी ऐकाकारी के साथ सभा में शामिल हों।

2) अवश्यकतानुसार प्रोग्राम में तबदीली की जा सकती है।

3) अपने बिस्तर आदि साथ लाने की कृपा करें, और अपने आने की सूचना देने की कृपा करें।

(मन्त्री देव धर्म)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts